आत्म शोधन प्रतिक्रमण

शंभु छन्द

गुणरत्नों से गुरुवर मेरे, पुण्यकोष को आज भरो।
आचार्य भक्ति करने आया, सब दोषों को साफ करो॥
आलोचन मैं तुमसे करता, क्रोधी-मानी हूँ गुरुवर।
मायावी-लोभी हम कहते, अत्याचारी हूँ गुरुवर॥१॥

गलती-गलती करता आया, दोषों का परिहार करो।
पश्चाताप आलोचन करता, विनती को स्वीकार करो॥
नन्हा बालक भगवन् तेरा, अज्ञानी को माफ करो।
ज्ञान प्रदाता मेरे गुरुवर, ज्ञान-ध्यान भरपूर भरो॥२॥

रुई लपेटी आग है गुरुवर, कब तक वह छिप सकती है।
मात-पिता सम तुमको मानूँ, कैसे वह रह सकती है॥
पालक तुम मेरे जीवन के, दोषों को तुम साफ करो।
प्रतिक्रमण आलोचन करता, शुभाशीष का हाथ धरो॥३॥

मोह महामद पीकर आया, निशदिन मैं बेहोश रहा।
हर पल गलती करता आया, दोषों का न ध्यान रहा॥
बेहोशी तुम दूर भगाओ, तुम चरणों की शरण गहे।
प्रतिक्रमण आलोचन करता, अपनी मंजिल लक्ष्य रहे॥४॥

पृथ्वी जल से क्षमा माँगता, वायु अग्नि सब क्षमा करें।
तरुवर से मैं क्षमा कराता, क्षमा का प्रभु अवतार धरे॥
द्वि-त्रि इन्द्रिय क्षमा कराता, चऊँ पंचेन्द्रिय क्षमा करें।
प्रतिक्रमण आलोचना करता, इस भव के प्रभु पाप हरें॥५॥

भूतकाल के पाप मिटाने, प्रतिक्रमण करने आया।
निंदा गर्हा आलोचन करता, पाप नाशने मैं आया॥

आतम शुद्धि देना गुरुवर, पुण्यकोष भरने आया।
प्रतिक्रमण आलोचन करता, चरण छाँव मैं हूँ आया॥६॥

प्राणीजन को कष्ट दिया हो, पीड़ा मैंने पहुँचाई।
शुद्ध साधना मैं न करता, कैसे हो गुरु कर्म धुलाई॥
अपना भक्त सम्भालो गुरुवर, भवसागर हमको तरना।
प्रतिक्रमण आलोचन करता, मुक्ति रमा मुझको वरना॥७॥

पंच अणुव्रत दोष लगा हो, उन दोषों को दूर करो।
त्रय गुणव्रत पालन करता हूँ, शिक्षाव्रत के दोष हरो॥
कहीं लगे अतिचार गुरु तो, मैं उनसे अनजान रहा।
प्रतिक्रमण आलोचन करता, दोषों को गुरु आज कहा॥८॥

दर्शन, व्रत सामायिक होती, प्रोषध सचित्त तुम जानो।
रात्रि भुक्ति ब्रह्मचर्य कहाती, आरंभ परिग्रह तुम मानो॥
अनुमति व उद्दिष्ट कहाती, ग्यारह प्रतिमा पाप लगे।
प्रतिक्रमण आलोचन करता, तुम चरणों में भाव जगे॥९॥

लिए हुए हैं व्रत अनेक जो, पूर्ण कभी न कर पाए।
आवश्यक कर्त्तव्य हैं गुरुवर, मुझसे ना वे हो पाए॥
क्षमामूर्ति हैं गुरुवर मेरे, क्षमा का गुरुवर दान करो।
प्रतिक्रमण आलोचन करता, दोषों को गुरु आप हरो॥१०॥

तन मन तुमको अर्पण करता, पंचम युग के तीर्थंकर।
क्षमा-क्षमा तुम करते रहना, हमको बनना सीमंधर॥
द्रव्य भाव से करूँ प्रतिक्रम, आलोचन कर भावों से।
मुक्ति प्राप्त करने मैं आया, क्षमा माँगता भावों से॥११॥

कायोत्सर्ग करें